जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड,
सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५६ वे ❖ अंक १२ वा ❖ ऑगस्ट २०२५ ❖ वीर संवत २५५१ ❖ विक्रम संवत २०८१

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● पू.श्री आनंदऋषिजी म.सा. जन्मोत्सव, पुणे	१५	● दिवाकर प्रभात इंटलैकट एलएलपी, पुणे	६९
● आदि आनंदजी चोरडिया – पुरस्कार	१६	● आवश्यक साधना है – प्रतिक्रमण	७०
● तप : आत्म-शोधन का साधन	१७	● घराचं घरपण – दुसऱ्याचा विचार	७२
● धर्म का मूल : विनय	२४	● जागृत विचार	७३
● चातुर्मास	२५	● हास्य जागृती	७४
● कव्हर तपशील	२६	● ऐसी हुई जब गुरुकृपा : चुभता शब्द न बोल	७९
● उपादान और निमित्त	३१	● जीवन की पावर फुल बातें	८०
● बिने जाने कित जाऊँ – प्रश्नोत्तरी प्रवचन	३६	● बँक बॅलेन्स – Locker	८१
● सुविचार	३८	● कडवे प्रवचन	८१
● पुणे शहर : चारों संप्रदाय ५४ चातुर्मास सूची	४३	● हम बीमार क्यों होते हैं ?	८३
● चातुर्मास स्वपर कल्याण	४६	● नारी तू नारायणी	८४
● महाराष्ट्र प्रांत – श्रमण संघीय चातुर्मास सूची	४७	● बिखरे मोती	८६
● जन गणनेत जैन जात ?	५१	● मायव्ही फुडस् प्रा. लि.	९१
● पंडित जुगल किशोर जैन ''मुख्तार''	५३	● युवा ऑर्किटेक्ट – श्री. तनय ललवाणी	९२
● वैराग्य वाणी – ब्रम्हचर्य व्रत	६३	● पी.एच.आर.सी. लाईफस्पेस ऑर्गनायझेशन	९३
● मानवीय उत्कर्ष का आधार है समानुभूति अर्थात मैत्री	६६		

- कटारिया फाऊंडेशन, पुणे – वृक्षारोपण ९४
- गुरु आनंद विहार सेवा मंडल – अहिल्यानगर ९४
- डॉ. सुजय रुणवाल, पुणे – पुस्तक प्रकाशन ९५
- सुर्यदत्त एज्युकेशन, पुणे ९६
- अहमदनगर मर्चन्ट बँक ९६
- श्री. वालचंदजी संचेती, पुणे ९७
- डायग्नोपिन डायग्नोस्टिक, कराड – उद्घाटन ९७
- आनंऋषिजी हॉस्पिटल – अहिल्यानगर ९९
- श्री. मनिषजी संचेती, पुणे – पुरस्कार ९९
- जैन कॉन्फरन्स – शपथविधी, नाशिक १००
- वर्धमान एज्युकेशन ॲण्ड रिसर्च सेंटर १०३
- चातुर्मास एक पावन परिवर्तन १०५
- सुरक्षा : अकस्मात से विलंब बेहतर है १०६
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति – ''मॅगझिन पोस्ट'' सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र साठी)

*** वार्षिक वर्गणी – रु. ८०० * त्रिवार्षिक वर्गणी – रु. २३००**

जैन जागृति – ''मॅगझिन पोस्ट'' सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र बाहेर)

*** वार्षिक वर्गणी – रु. ९०० * त्रिवार्षिक वर्गणी – रु. २६००**

मॅगझिन पोस्ट या सुविधेमुळे प्रत्येक ग्राहकांना १००% अंक ३ ते ४ दिवसात मिळणार.

या अंकाची किंमत ५० रु. • **Google Pay - M. 9822086997**

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा.
- 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

आचार्य भगवंत पू.श्री आनंदऋषिजी म.सा. १२६ वाँ जन्मोत्सव, पुणे
* २१०० अट्ठाई तपश्चर्या * सव्वा करोड नवकार महामंत्र जाप

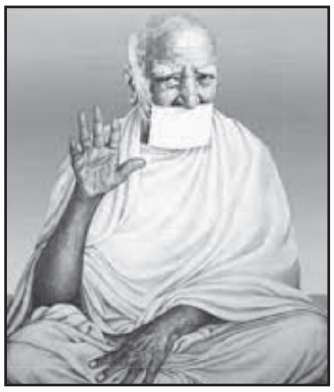

पुणे वर्धमान सांस्कृतिक केंद्र में २५ जुलाई २०२५ को १२६ वाँ श्री गुरु आनंद जन्मोत्सव और २१०० से अधिक सामूहिक अष्टादश अट्ठाई महोत्सव का भव्य आयोजन संपन्न हुआ । यह ऐतिहासिक कार्यक्रम उपाध्याय प्रवर प.पू. प्रवीणऋषिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में सुबह ८.३० बजे से दोपहर १२.०० बजे तक अत्यंत उत्साह और भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ । इस अभूतपूर्वक आयोजन ने जैन समाज में एकता और आध्यात्मिक ऊर्जा प्रस्थापित हुई ।

यह महोत्सव न केवल श्री गुरु आनंद जन्मोत्सव का १२६ वाँ स्मरणोत्सव था, बल्कि यह ''आनंद जन्मोत्सव की है बधाई, हर घर अट्ठाई मेरे घर अट्ठाई के जयघोष के साथ परिवर्तन की भावना को भी आत्मसात कर रहा था । १७ वर्षों से लगातार आयोजित हो रहे तपोस्तव की परंपरा को अगे बढाते हुए इस अट्ठाई तप साधना के महा अनुष्ठान में 'णमोत्थुणं' आराधना और

ध्यान का विशेष महत्त्व रहा ।

इस ऐतिहासिक क्षण प.पू. आचार्य श्री गुप्तीनंदीजी गुरुदेव म.सा. आदि ठाणा, प.पू. जे.पी. गुरुदेव म.सा., उपाध्याय प.पू. श्री प्रवीणऋषिजी म.सा आदि ठाणा २, उपप्रवर्तक प.पू. श्री तारकऋषिजी म.सा. आदि ठाणा ४, प.पू. श्री मुकेशमुनीजी म.सा. आदि ठाणा ४, प.पू. श्री आगमचंद्रजी स्वामी म.सा. आदि ठाणा ३, प.पू. डॉ. श्री आदर्शज्योतीजी म.सा. आदि ठाणा ३, प.पू. श्री सुनंदाजी म.सा. आदि ठाणा ६, प.पू. श्री चैतन्यश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ४ का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ।

पूज्य आचार्य भगवंतों की उपस्थिति ने जैन समाज में एकता का एक सशक्त संदेश दिया । यह दृश्य अपने आप में विहंगम था, जहाँ विभिन्न परंपराओं के संत एक मंच पर आकर आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त कर रहे थे ।

सव्वा करोड नवकार महामंत्र जाप से रचा इतिहास

आनंद सप्ताह में २० जुलै को एक अनुपम और ऐतिहासिक आयोजन संपन्न हुआ । जिसमें सव्वा करोड नवकार महामंत्रों का सामुहिक जाप किया गया । २५ हजार लोगों की उपस्थिती में सुबह ८ से १० समय में नवकार महामंत्र का एक साथ उच्चारण हुआ । पुरे वातावरण में अद्‌भुत उर्जा, शांती और दिव्यता का संचार हुआ ।

१८ से २६ जुलाई आनंद सप्ताह में लोगस्स जाप, उवसग्गहरं जाप, नमोत्थुणं जाप, पंच तीर्थंकर जाप, पुच्छीसुंणं जाप, ॐ आनंद गुरुवे नमः जाप इ. जाप संपन्न हुए । रोज सुबह 'आनंद दृष्टि-सृष्टि' इस विषय पर प्रवचन हुए । रात को 'आनंद गाथा' के प्रवचन हुए । रक्तदान शिबीर, अन्नदान का आयोजन हुआ ।

इस अद्वितीय आयोजन को सफल बनाने में श्री आदिनाथ स्थानकवासी जैन भवन ट्रस्ट, पुणे एवं उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी चातुर्मास समिती २०२५ का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा । ●

आदि आनंदजी चोरडिया को ''युवा पर्यावरण गौरव पुरस्कार''

पुणे : एन्वायरनमेंट क्लब ऑफ इंडिया और महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण मंडल द्वारा आयोजित समारोह में सुहाना ग्रुप के श्री. आनंदजी राजकुमारजी चोरडिया इनके सुपुत्र चि. आदि चोरडिया को २०२५ का युवा पर्यावरण गौरव पुरस्कार प्रदान किया गया। वे यह सम्मान पाने वाले सबसे युवा व्यक्ति बने हैं। यह पुरस्कार उन्हें पर्यावरण संरक्षण, कचरा प्रबंधन, जल संरक्षण और शाश्वत जीवनशैली को बढ़ावा देने के लिए मिला। सम्मान MPCB के निदेशक श्री सिद्धेश कदम द्वारा प्रदान किया गया। पद्मश्री डॉ. जी. डी यादव इनकी प्रमुख उपस्थिती थी । आदि की यह उपलब्धि युवाओं के लिए प्रेरणा है और सतत भारत की ओर एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। अभिनंदन ! ●

जैन जागृति... ''धर्म प्रभावना'' चे ५६ वे वर्ष

धर्म का मूल : विनय

लेखक : उपाध्याय डॉ. विशालमुनिजी म.सा.

अभिमान के कारण मनुष्य हमेशा अशांत व दुःखी रहता है। उसका अभिमान ही उसको कर्मबंधनों में बाँधता है। अभिमान तोड़ने के बाद मनुष्य में विनयभाव बढ़ता जाता है। विनयभाव आने से उसके मन में जगत के सभी प्राणिमात्र के प्रति आदर, सत्कार, दया, करुणा व स्नेह पैदा होता है। उसके लिए संसार में कोई शत्रु-मित्र, अपना पराया नहीं रह जाता। कोई उसे छूरा घोंपता है फिर भी वह उस पर क्रोध नहीं करता, चमड़ी उधेड़ते हैं, जलाते हैं फिर भी वे उफ तक नहीं करते। विनय से ऐसी शक्ति पैदा होती है, इसलिए विनय धर्म को सबसे बड़ा धर्म माना गया है। अपने अभिमान को तोड़कर विनयशील बनने का प्रयास करें।

विनयभाव में पहुँचना मनष्य के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। विनयभाव मानव को महामानव व पुरुष को महापुरुष, तीर्थंकर बना देती है। वीतराग भगवान महावीर को कितना कष्ट दिया गया। किंतु उन्होंने कभी किसी का अशुभ नहीं किया। सुकरात को ज़हर का प्याला पिलाया गया। जीजस को सूली पर लटकाया गया। किंतु उन्होंने उफ तक नहीं किया। कभी किसी का बुरा नहीं सोचा। इसे कहते हैं विनयभाव, इसी विनयभाव के चलते उपरोक्त आत्माएँ पूजनीय बनीं। जो विनय के महल में प्रवेश कर जाता है वह परमशांति को प्राप्त कर लेता है। परमात्मा उसके करीब होते हैं।

विनयशीलता की स्थिति में पहुँचना आसान नहीं है। इसके लिए सारे अभिमान को, कर्म बंधनों को तोड़ना पड़ता है। जब तक अभिमान नहीं टूटेगा विनय नहीं आ सकता। इस अभिमान को तोड़ने के लिए भगवान महावीर स्वामी ने कहा था अपने आप को पहचानो, अपनी आत्मा को खोजो। जो सिर्फ अपने को, अपनी आत्मा को जान लेता है। वह संपूर्ण संसार को जान लेगा। भगवान ने यह भी कहा था कि जो एक को जानता है वह संपूर्ण जगत को जान लेता है। क्योंकि सारा संसार एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। इसलिए सबसे पहले आत्मा को जानने का प्रयास करें। हमारे व हमारी आत्मा के बीच अनेकों परतें पड़ी हुई हैं। रुकावटें हैं यह रुकावटें अभिमान, गर्व व अहम् के रुप में हमारे अंदर विराजमान हैं। इन्हें तोड़े बिना हम आत्मा तक नहीं पहुँच सकते।

जमीन में पानी है। उसे प्राप्त करने की जरुरत है। उसी प्रकार आत्मा हमारे अंदर विद्यमान है। उसके ऊपर अभिमान, गर्व की जो परतें चढ़ गई हैं। उसे तोड़ने, दूर करने की आवश्यकता है। अभिमान ही सुख दुःख, मित्र-शत्रु, अपने-पराए, का कारण हैं। इसे दूर किए बिना संसार के दुःखों से उपरांत नहीं हुआ जा सकता। शांति प्राप्त नहीं होती। अभिमान ने हमारी आत्मा को संसार में कस रखा है। जब हम अभिमान पर हावी हो जाते हैं, उसे नष्ट कर देते हैं तो हमारे अंदर विनय बढ़ता चला जाता है। यही विनय, धर्म का मूल है, सबसे बड़ा धर्म है, यही व्यक्ति को धर्मात्मा बनाता है। विनय का विवेचन करते हुए बताया कि अभिमान का अभाव विनय है। जब अभिमान टूटता है तो विनय पैदा होता है और विनय पैदा होता है तो मनुष्य के अंदर अपार करुणा व दया, मैत्रीभाव भर जाता है। फिर वह किसी के विषय में कुविचार नहीं रखता। शत्रुओं को भी मित्र समझता है।

ऐसी स्थिति में पहुँचने वाला, संसार से अलग हो जाता है व संसार उससे दूर होता चला जाता है। और वह जान जाता है कि सब अपने कर्म से जी रहे हैं। वह अपने कर्म कर रहे हैं। हमें अपना कर्म करना है। ऐसी स्थिति में उसके अंदर किसी स्थिति में भी उद्वेग नहीं

आएगा और वह हर हाल में प्रसन्न रहेगा। घृणित व्यक्ति का भी अपमान नहीं होगा। उनसे घृणा द्वेष नहीं करेगा।

जरा सोचो महापुरूषों का मापदंड क्या है? कोई नहीं। उन्हें मापा नहीं जा सकता। आप जिससे घृणा करते हैं, हो सकता है, वह तुम्हारे से पहले मोक्ष, केवल ज्ञान प्राप्त कर जाए। किंतु आज हम महापुरूषों को छोटी-छोटी बातों से मापने लगे हैं। सफेद, पीला, भगवा कपड़ों से, उनकी माप करते हैं। महापुरूष वह होते हैं जो निरग्रंथ हैं। वे किसी एक चीज़ में नहीं बँधते, जाति-संप्रदाय में भेदभाव नहीं करते, प्राणी मात्र पर करुणा वात्सल्य मैत्रीभाव रखते हैं। उन्हें माप पाना आसान नहीं है। हमारे मापदण्ड बिल्कुल भी सार्थक नहीं है।

विनय आ जाने पर अपना ही माप शुरु हो जाता है। उससे परम शांति मिलती है। विनय को प्राप्त करने का प्रयास करते आएँ। एक न एक दिन विनय महल में अवश्य प्रवेश होगा ही। जिनवाणी को बरसात के शुद्ध जल जैसा बताते हुए कहा कि यह जल इतना पवित्र होता है कि वह औषधि के रुप में उपयोग किया जाता है। किंतु जब वह जमीन पर गिरता है तो कीचड़ बन जाता है। उसी प्रकार जिन वाणी यदि अपवित्र आत्मा पर पड़ती है तो अपवित्र हो जाती है। सागर के सीप की तरह भक्त के हृदय में पडती है तो और पवित्र हो जाती है। इसलिए धर्मसभा में आने पर अपने मन को शुद्ध रखो। उसमें किसी प्रकार के बुरे विचार मत आने दो। यदि पवित्र मन से, यह वाणी सुनोगे तो इसका असर लम्बे समय तक तुम्हारे ऊपर रहेगा और वह तुम्हारी आत्मा के समीप तुम्हें ले जाने में मदद करेगा। ●

समाजाची आवड, समाजाची निवड
जैन जागृति

चातुर्मास

महापुरुषों की अमृत वाणी सुनने का अवसर है – चातुर्मास
जीवन का पावन परिवर्तन है – चातुर्मास
आत्मा की जागृति का अच्छा अवसर है – चातुर्मास
निज भान के परीक्षण का नाम है – चातुर्मास
जीव के स्वात्म अवलोकन का नाम है – चातुर्मास
शुद्धात्म भाव को प्रकट करने की ललक का सुअवसर है – चातुर्मास
आत्मा के अंधेरे को दूर करने का नाम है – चातुर्मास
ज्ञान रूपी प्रकाश को प्रकट करने का नाम है – चातुर्मास
आत्मा को नई राह दिखाने का नाम है – चातुर्मास
चिंतन की धारा में बहने का पावन अवसर है – चातुर्मास
विभाव को रोककर स्वभाव में रमने का नाम है – चातुर्मास
परमात्मा की ओर बढ़ने का पावन अवसर है – चातुर्मास
अंतर शक्ति को जगाने का नाम है – चातुर्मास
विनाशी से अविनाशी बनने की यात्रा का नाम है – चातुर्मास
साधना की गहराई में जाने का अवसर है – चातुर्मास
आत्म अनुभूति का स्पन्दन है – चातुर्मास
आत्म शुद्धि के सर्वश्रेष्ठ साधन का नाम है – चातुर्मास
इन्द्रियों को वश में करने का नाम है – चातुर्मास
कषायों पर विजय प्राप्त करने का नाम है – चातुर्मास
साधुओं का विशेष कल्प है – चातुर्मास
तप के द्वारा कर्म निर्जरा का अवसर है – चातुर्मास
स्व पर कल्याण की साधना में बढ़ने का नाम है – चातुर्मास ●

कव्हर तपशील - ऑगस्ट२०२५

❖ **आचार्य पू.श्री आनंदऋषिजी म.सा. – जन्मोत्सव**
आचार्य भगवंत पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांचा १२६ वा जन्मोत्सव पुणे येथे अति भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाला. यात सव्वा करोड नवकार महामंत्राचा जाप व २१०० + अट्ठाई तपश्चर्या संपन्न झाल्या. (बातमी पान नं. १५)

❖ **पी.एच.आर.सी. लाईफस्पेस ऑर्गनायझेशन, पुणे**
पी.एच.आर.सी. लाईफ स्पेस ऑर्गनायझेशन यांच्या वतीने शैक्षणिक संकूल व अत्याधुनिक दर्जाचे मल्टी स्पेशालिटी रुग्णालय सुरु करण्यात येणार आहे. याचे भूमिपूजन दि. ४ जुलै २०२५ रोजी केंद्रिय गृहमंत्री व सहकार मंत्री नामदार श्री. अमितभाई शहा यांच्या हस्ते संपन्न झाले.
(बातमी पान नं. ९३)

❖ **आदि आनंदजी चोरडिया – पुरस्कार**
पुणे येथील श्री. आनंदजी राजकुमारजी चोरडिया (सुहाना ग्रुप) यांचे संपुत्र चि. आदि याला युवा पर्यावरण गौरव पुरस्कार प्राप्त झाला.
(बातमी पान नं. १६)

❖ **श्री. वालचंदजी संचेती – श्रावक शिरोमणी उपाधी**
पुणे येथील श्री. वालचंदजी संचेती यांना ८६ वा जन्म दिवशी साधना सदन संघ, महावीर प्रतिष्ठान पुणे तर्फे ''श्रावक शिरोमणी'' उपाधी देऊन सन्मानित करण्यात आले. (बातमी पान नं. ९७)

❖ **डायग्नोपिन डायग्नोस्टिक, कराड शाखा**
डायग्नोपिन कराड येथील नवीन शाखेचा शुभारंभ प्रांत अधिकारी अतुलजी म्हेत्रे, तसेच डॉ. सुमितजी पाटील , सतीशजी बनवट, सुनीलजी शिंदे, प्रफुल्लजी कोठारी, मितेशजी कोठारी यांच्या हस्ते करण्यात आले. (बातमी पान नं. ९७)

❖ **मायव्ही फुडस् प्रा. लि., पुणे**
पुणे येथील रायसोनी ग्रुप – मायव्ही फुडस् प्रा. लि. व पगारिया एक्सपोर्टस् प्रा. लि., नागपूर यांचा व्यापार करार संपन्न झाला. (बातमी पान नं. ९१)

❖ **श्री. मनिष संचेती, पुणे – पुरस्कार**
पुणे येथील बन्सीलाल लखीचंद संचेती या फर्मचे संचालक श्री. मनिषजी अभयजी संचेती यांना सकाळ गौरव गाथा यांच्या तर्फे त्यांचा सन्मान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ९९)

जैन जागृति
जीवन साथी

दोन जीवाच्या मिलनाचा मंगल मार्ग.
आजच आपल्या परिवारातील मुला-मुलींची वधू-वर निवडण्यासाठी जैन जागृति मध्ये जाहिरात द्या.

हजारो जैन परिवार पर्यंत पोहचा.